# छंद के भेद और दोहा छंद

वर्ण और मात्रा के विचार से छंद के चार भेद हैं जो निम्नलिखित है :-

1. मात्रिक छंद 2. वार्णिक छंद

3. उभय छंद 4. मुक्त छंद

1. मात्रिक छंद – मात्रा की गणना पर आधृत छंद मात्रिक छंद कहलाता है। इन छंदो में मात्राओं की समानता के नियम पर पूरा-पूरा ध्यान तो रखा जाता है, किंतु वर्णों की समानता पर ध्यान नहीं दिया जाता है। ऐसे छंद को मात्रिक छंद कहते हैं।

2. वार्णिक छंद – केवल वर्ण गणना के आधार पर रचा गया छंद वार्णिक छंद कहलाता है। इन शब्दों में वर्णों की संख्या और नियम का ध्यान रखा जाता है।

मात्रिक छंद और वार्णिक छंदों के तीन-तीन भेद हैं –

1. सम, 2. अर्द्धसम, 3. विषम

सम – जिस छंद के चारों चरणों में मात्राओं और वर्णों की संख्या बराबर होती है उसे सम कहते हैं। जैसे–चौपाई।

अर्द्धसम – जिस छंद के प्रथम और द्वितीय तथा तृतीय और चतुर्थ चरणों में मात्राओं अथवा वर्णों की संख्या बराबर होती है, उसे अर्द्धसम कहते हैं। जैसे – दोहा, सोरठा, बरवै आदि

विषम – जिस छंद में चार से अधिक 6 चरण हों तथा प्रत्येक चरण में मात्राएँ अथवा वर्णों की संख्या भिन्न-भिन्न हो उसे विषम कहते हैं जैसे छप्पय, कुंडलियाँ आदि।

3. उभय छंद - गणों में वर्णों का बंधा होना प्रमुख लक्षण होने के कारण इसे उभय छंद कहते हैं। इन छंदों में मात्रा और वर्ण दोनों की समानता बनी रहती है।

4. मुक्तक छंद - चरणों की अनियमित, असमान, स्वछंद गति और भावानुकूल यतिविधान ही मुक्तक छंद की विशेषता है। इसका कोई नियम नहीं है। यह एक प्रकार का लयात्मक काव्य है जिसमें पद्य का प्रवाह अपेक्षित है। निराला से लेकर 'नई कविता' तक हिंदी कविता में इसका अत्यधिक प्रयोग हुआ है।

## दोहा

दोहा छंद एक अर्द्ध सम मात्रिक छंद है। इस छंद के विषम चरणों (प्रथम और तृतीय) में 13 मात्राएँ और सम चरणों में (द्वितीय और चतुर्थ) में 11 मात्राएँ होती हैं। यति चरण के अंत में होती है। विषम चरणों के आदि में जगण नहीं होना चाहिए। समचरणों के अंत में लघु होना चाहिए। जैसे -

1. मेरी भव बाधा हरो,
राधा नागरि सोय,
जा तन की झाईं परे,
स्याम हरित दुति होय।

2. श्री गुरु चरन सरोज रज, निज मन मुकुर सुधार
बरनौं रघुवर बिमल जस, जो दायक फल चार।

पूनम कुमारी
हिन्दी विभाग,
एस. बी. कॉलेज,
आरा।